P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-1* September- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# मालवा का ऐतिहासिक भूगोल : संस्कृत साहित्य के विशेष संदर्भ में

**रागिनी राय**
पोस्टडॉक्टोरलफेलो,
प्राचीन इतिहास,संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

**सारांश**

प्रस्तुत शोधपत्र में हमने 11वीं से 13वीं शताब्दी तक के संस्कृत वाग्मय में उल्लिखित मालवा के ऐतिहासिक भूगोल के सांस्कृतिक अध्ययन को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इन ग्रंथों में मालवा से सम्बन्धित जो भी सूचनाएँ प्राप्त होती हैं उनको सर्वमान्य कालक्रमानुसार व्यवस्थित किया गया है। पद्मगुप्त कृत नवसहसांकचरित मालवा से सम्बन्धित राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक सभी पहलुओं के स्रोत सामग्री के रूप में महत्वपूर्ण है। इस ग्रंथ में मालवा की प्राकृतिक संरचना, वनों, पर्वतों एवं ऋतुओं का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इसकी कथाओं में विदिशा स्थिति 'भाइलस्वामिदेवपुर' एवं 'महाकाल' का विस्तृत उल्लेख प्राप्त होता है। 12वीं शताब्दी से अपभ्रंश ग्रंथ 'बड्ढमाणचरिउ' में भी मालवा स्थित सरोवरों, घाटियों, नदियों, वृक्षों से भरपूर अवन्तिदेश का वर्णन है जिसमें उज्जयिनी नाम की एक पुरी है। परमार शासक भोज के समय में राजधानी उज्जयिनी से धारा में स्थानान्तरित होने से 'धार' का महत्व बढ़ गया और शैक्षिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का यह महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया। 'खतरगच्छवृहद्गुर्वावलि' में धारा नगरी का विस्तृत वर्णन है जहाँ जैन प्रतिमाओं से युक्त देवगृह था। हमने कुछ परवर्ती रचनाओं का भी उल्लेख किया है जिनका सम्बन्ध 11–12वीं शताब्दी के मालवा विशेषतः परमार शासक भोज से सम्बन्धित है। इस प्रकार यह कार्य ग्रंथों में प्राप्त ऐतिहासिक भूगोल का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत करता है।

**मुख्य शब्द** : ऐतिहासिक भूगोल, संस्कृत साहित्य, मालवा, उज्जयिनी एवं महाकाल, धारा नगरी, नवसहसांकचरित्।

**प्रस्तावना**

आधुनिक मध्य प्रदेश की सीमा के अंतर्गत आने वाले मालवा क्षेत्र का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह प्रदेश उत्तरी अक्षांश 210. 70–250.10 तथा पूर्वी देशान्तर 730.45–790.14 के मध्य स्थित है। अनेक नदियों से अभिसिंचित इस क्षेत्र में प्रागैतिहासिक युग से लेकर ऐतिहासिक युग तक की संस्कृतियों का परिज्ञान सम्भव है। इस क्षेत्र के वैभवशाली इतिहास एवं वैशिष्ट्य ने मुझे इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए अभिलाषित बनाया। ऐतिहासिक भूगोल के अध्ययन का प्रारम्भ 18वीं शताब्दी में यूरोप में प्रारम्भ हुआ। कतिपय यूरोपीय देशों की अपेक्षा भारत में ऐतिहासिक भूगोल का अध्ययन अभी शैशवावस्था मे ही है। आधुनिक भारत में ऐतिहासिक भूगोल के अध्ययन का श्रीगणेश अलेक्जेंडर कनिंघम ने श्वान–च्वाँग के यात्रा विवरण के आधार पर 'ऐंशिएण्ट ज्यॉग्रफी ऑफ इण्डिया' (1871) नामक ग्रंथ लिखकर किया। तत्पश्चात् जॉन पॉश, एच0सी0 रायचौधरी, वासुदेव शरण अग्रवाल, नन्दू लाल डे आदि अनेक विद्वानों ने ऐतिहासिक भूगोल के अध्ययनक्रम को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण कार्य किया।

**साहित्यावलोकन**

मालवा क्षेत्र पर पी0के0 भट्टाचार्य एवं मालती महाजन ने कार्य किया है। भट्टाचार्य की पुस्तक 'हिस्टॉरिकल ज्यॉग्रफी ऑव मध्य प्रदेश' केवल 'अर्ली रिकार्ड्स' पर आधारित है, साथ ही मालती महाजन की पुस्तक 'मध्य प्रदेश : कल्चरल एण्ड हिस्टॉरिकल ज्यॉग्रफी फ्राम प्लेस नेम्स इन इंस्क्रिप्शन्स' मूलतः अभिलेखों पर आधारित है। इस प्रकार मालवा के ऐतिहासिक भूगोल पर अभी तक कोई सर्वांगींण गम्भीर कार्य नहीं हुआ है। मालवा के ऐतिहासिक भूगोल के सांस्कृतिक अध्ययन के लिए अनेकानेक साहित्यिक प्रमाण उपलब्ध हैं। मैंने वैदिक काल से प्रारम्भ कर 13वीं शताब्दी तक के ग्रन्थों विशेषतः संस्कृत साहित्य के आधार पर मालवा के ऐतिहासिक भूगोल के सांस्कृतिक अध्ययन पर कार्य किया है। अपने इस कार्य को हमने तीन भागों में विभाजित किया है–

1. वैदिक काल से 7वीं–8वीं शताब्दी ई0 तक
2. 8वीं से 10वीं शताब्दी ई0 तक,
3. 11वीं से 13वीं शताब्दी ई0 तक।

प्रस्तुत शोध पत्र इस कार्य की अंतिम कड़ी है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य 10वीं से 13वीं शताब्दी तक के ग्रंथों विशेषतः संस्कृत साहित्य के आधार पर मालवा के ऐतिहासिक भूगोल एवं संस्कृति का सम्पूर्ण खाका खींचना है। अधीतकालीन ग्रन्थों में अनेकानेक भौगोलिक एवं सांस्कृतिक सामग्री प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती है। इन साहित्यिक प्रमाणों के विश्लेषण से बहुधा नूतन सूचनायें उपलब्ध होती हैं जो ऐतिहासिक भूगोल की सूचनाओं में अभिवृद्धि करती हैं। अतः ग्रन्थों में प्राप्त मालवा से सम्बन्धित स्थानों और भौगोलिक इकाइयों का अभिज्ञान तथा उनके सांस्कृतिक महत्व को उद्घाटित करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

11वीं शती की 'नवसहसांकचरित्'[1] 'पद्मगुप्त' की एक अनुपम कृति है। इसमें परमार वंशीय सिन्धुराज एवं नागवंशीय शशिप्रभा की प्रेम कहानी वर्णित है। इसमें प्रमुख चित्रण सिन्धुराज नवसहसांक की जीवन–घटनाओं का है। 'अष्टादश सर्ग' से युक्त पद्मगुप्त के इस महाकाव्य में इतिहास–प्रसिद्ध, परमार–प्रसूत राजा के कथानक का आश्रयण है।

इस महाकाव्य का आरम्भ भगवान शिव, गणेश एवं पार्वती तथा सरस्वती की वन्दना से होता है।[2] तदनन्तर कवि ने अपने पूर्ववर्ती कवियों को श्रद्धांजलि दी है।[3] 'प्रथम सर्ग' में उज्जयिनी नगरी का अति सुन्दर वर्णन[4]ए सिन्धुराज का वर्णन[5]ए कुल राजधानी धारा का वर्णन[6] प्राप्त होता है। वर्णित है कि लंका नगरी एवं अलका नगरी भी धारा नगरी की समानता नहीं कर सकती थी। नवसहसांकचरित के 'षष्ठ सर्ग में शशि प्रभा द्वारा महाकालेश्वर के उत्सव में उज्जयिनी जाने का उल्लेख है।[7]

नवसहसांकचरित महाकाव्य में ऐतिहासिक सामग्री भरी पड़ी है। परमारवंश के सर्वप्रथम महाप्रतापी राजा उपेन्द्र[8] का उल्लेख है, जिसकी पुष्टि उदयपुर प्रशस्ति से भी होती है[9]। इस प्रकार 'एकादश सर्ग' के 'परमारवंशवर्णनम्' में परमारवंश की पूरी वंशावली दी गयी है।[10] सिन्धुराज की कोशल[11], लाट[12], शिलाहार राजा[13] एवं मुरल, (जिसकी भौगोलिक स्थिति के बारे में बहुत मतभेद हैं) पर विजयों[14] एवं विशेषकर हूणों के दमन[15] के बारे में इससे पता चलता है।

'नवसहसांकचरित' में हमें मालवा की प्राकृतिक संरचना, वनों[16], पर्वतों[17] एवं ऋतुओं[18] का भी विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इस प्रकार नवसहसांकचरित पूर्वमध्यकालीन भारत के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सभी पहलुओं के स्रोत सामग्री के रूप में महत्वपूर्ण है।

परमार शासक भोज के समय साहित्यिक प्रगति चर्मोत्कर्ष पर थी।[19] धारा की सरस्वती मूर्ति ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन में है। 'श्रृंगारमंजरीकथा'[20], कथा साहित्य से सम्बन्धित भोज की एक महत्वपूर्ण रचना है, जिसमें मालवा से सम्बन्धित ऐतिहासिक भूगोल एवं संस्कृति के प्रमाण मिलते हैं। 'श्रृंगारमंजरीकथा' में धारानगरी का वर्णन[21] बड़ा ही विस्तारपूर्वक किया गया है। उल्लिखित है कि अमृतरस की धारा के समान धारा नगरी अपने नूतन तथा विभिन्न विधान के कारण सारे पुराने पत्तनों (नगरों) का उपहास करती है। धारा नगरी के भवनों की सज्जा, सुगन्ध, इतिहास पुराण, श्रुति–स्मृति आदि की ध्वनि संगीत श्वेत प्राकार, गहन परिखा, आकर्षक तालाब एवं अनुपम उद्यानों, सुरक्षित पत्तन, पथिकों का उल्लेख है। धारा के स्वामी भोजदेव को सत्य, धर्म, कला, क्षत्राचार, विविध विद्या, नीति, शौर्य, विलास, करूणा, विदग्धता आदि गुणों में अप्रतिम बताया गया है[22]। 1020–21 ई0 में भोज ने परमार राजधानी उज्जैनी से धारा स्थानान्तरित कर उसे नानाविध अलंकृत करने का प्रयास किया था। गणिका श्रृंगारमंजरी की माँ विषमशीला द्वारा सुनाई गयी चतुर्दशकथा 'सूरधर्मकथानिका' में उज्जयिनी की देवदत्ता का उल्लेख है जो किसी पागल के चक्कर में फंस गयी थी, जो उसे छोड़कर चला गया था।[23]

पाँचवी कथा में उज्जैन के राजा विक्रमादित्य एवं उसकी गणिका देवदत्ता का वर्णन है[24] सातवें कथा में विदिशा के एक ब्राह्मण एवं विदिशा के राजा विष्णुदत्त का उल्लेख है।[25] आठवें कथा में विदिशा नगरी एवं वहां स्थित भाइलस्वामिदेवपुर का उल्लेख है।[26] तेरहवें कथा में अवन्ति में उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के शासन में मूलदेव नामक धूर्त की कथा है, जिसने स्त्रियों के चरित्र में आशंका होने से विवाह नहीं किया था।[27] चौथे एवं पाँचवें कथा में महाकाल का उल्लेख है।[28]

'अभिधानचिन्तामणि'[29] 12वीं शताब्दी में लिखा गया एक संस्कृत कोश साहित्य है। इसके रचयिता आचार्य हेमचन्द्र हैं। हेमचन्द्र ने उज्जयिनी के चार नाम बताये हैं– उज्जयिनी, विशाला, अवन्ती, पुष्पकरण्डिनी।[30]

12वीं शताब्दी के अपभ्रंश ग्रंथ 'वड्ढमाणचरिउ[31] 10 संधियों में विभक्त है, इसमें वर्धमान के चरित का सांगोपांग वर्णन है। संधि–7 में अवन्ति देश एवं उज्जयिनी नगरी का वर्णन है। इस ग्रंथ में सरोवरों,घाटियों, धनधान्य, मुनियों, रूपसी स्त्रियों, देवगणों, नदियों, वृक्षों से भरपूर अवन्ति देश का वर्णन है, जिसमें उज्जयिनी नाम की एक पुरी है, जो देवों के भी मन को हर्षित करती है। यहां के भवन स्वर्ग को भी मात देते हैं। यहां के अनेकों हाट–बाजारों में लोगों की भीड़ लगी रहती है।[32] रचयिता 'बुधश्रीहरि' ने उज्जयिनी नगरी की समृद्धि का वर्णन किया है, तत्कालीन राजा वज्रसेन का उल्लेख किया है।[33]

'खतरगच्छबृहद्गुर्वावलि'[34] 11वीं–14वीं शताब्दी की रचना है। इसमें धारा नरेश नरवर्मा द्वारा पंडितों की एक महासभा आयोजित करने का उल्लेख है, जो कि परम्परा में पहले से चली आ रही थी[35]। धारापुरी में पार्श्वनाथ, शांतिनाथ और अजितनाथ की प्रतिमाओं से युक्त देवगृह था।[36] जिनदत्तसूरि (12वीं शताब्दी) के प्रसंग में यह उल्लेख आया है, कि वह भ्रमण करते हुए धारा नगरी भी गया था। उज्जयिनी में उन्होनें विहार करते हुए 'उज्जयिनी चक्र' की पूजा की।[37] विक्रम संवत् 1310 में जिनसंघसूरि के चतुर्विध संघ के विहार के संदर्भ में उल्लिखित है कि उज्जयिनी में महावीर, चन्द्रप्रभ और शांतिनाथ का एक मंदिर था।[38] विक्रम संवत् 1319 में

उज्जयिनी में अभयतिलगणि उपाध्याय ने तपोमति पं0 विद्यानन्द को शास्त्रार्थ में सिद्धान्त बल से पराजित कर जयपत्र प्राप्त किया।[39] बृहद्गुर्वावलि में भी मालवदेश स्थित उज्जयिनी नगरी का उल्लेख मिलता है।[40]

कुछ परवर्ती रचनायें, जो हमारे अध्ययन में उपयोगी हो सकती हैं, इस प्रकार हैं–

'प्रभावकचरित'[41], (रचनाकाल 1334 वि0सं0 (1277ई0) पद्यबद्ध प्रबन्ध है, जिसमें जैनधर्म के प्रभावशाली 22 आचार्यों का विवरण हैं। 'प्रभाचन्द्र सूरि' द्वारा रचित इस ग्रंथ में महाकवि धनपाल का जीवनवृतांत दिया गया है। प्रभावकचरित में उल्लिखित है कि मध्यदेश के संकाश्य नाम के स्थान में रहने वाला ब्राह्मण (धनपाल के पिता) मालवदेश की राजधानी धारा नगरी में आकर रहता था। उसका नाम सर्वदेव था। धारानगरी इस समय साधुओं, ज्ञानियों, मुनियों और जैनियों का गढ़ था। प्रभावकचरित के 'सुराचार्य चरितम्' में अथ श्री भोजराजस्य वाग्देवी कुलसदनः का उल्लेख प्राप्त होता है, इसको पाठशाला भी कहा गया है, जहां भोजदेव विरचित व्याकरण का अभ्यास होता था। 'प्रभावकचरित' में इस सम्बन्ध में एक घटना का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि जब चालुक्य नरेश सिद्धराज जयसिंह ने विजयी होकर उज्जयिनी नगरी में प्रवेश किया तो पाया कि वहां के विद्यार्थी भोजकृत व्याकरण तथा उसके अन्य ग्रंथों का रात दिन अध्ययन कर रहे थे और वहां का पुस्तकालय भोज की रचनाओं से भरे हुए थे।[42]

'सूक्तिमुक्तावली'[43] सूक्तिग्रंथ का निर्माणकाल तेरहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध है। इसके रचयिता जल्हड़ हैं। इस ग्रंथ की कई सूक्तियों में विन्ध्यपर्वत का वर्णन मिलता है।[44] नगरी वर्णन पद्धति नामक अध्याय में उज्जयिनी का वर्णन है।[45]

गद्य में रचित जैन प्रबन्धों में अर्ध–ऐतिहासिक प्रसिद्ध पुरूषों की जीवनी बड़े ही रोचक ढंग से लिखी गई है। 'प्रबन्धचिन्तामणि'[46] की रचना 'मेरूतुंगाचार्य' ने 1361 विक्रमी (1305ई0) में की। यह पाँच प्रकाशों में विभक्त है। द्वितीय प्रकाश, भोज–भीम प्रबन्ध[47] कहलाता है। यह परमारवंशी भोज और चालुक्यवंशी भीम के परस्पर सम्बन्धों को दर्शाता है। द्वितीय प्रकाश में भोजदानवृत्तम्[48] प्रबन्ध भी है। धनपाल प्रबन्ध[49] में उल्लिखित है कि प्राचीनकाल में विशाला (उज्जयिनी) नगरी में मध्यदेशोत्पन्न संकाश्य गोत्रीय नामक ब्राह्मण निवास करता था, उसके धनपाल और शोभन नामक दो पुत्र थे।

'भोजप्रबन्ध'[50], बल्लालसेन द्वारा रचित काव्यग्रंथ है। इसका समय 16वीं शताब्दी है। यह ग्रंथ धारा के राजा भोजराज की प्रशंसा में विरचित है, जिसमें हम प्राचीन कवियों को राजा की सभा में स्तुति करते पाते हैं। यहां कालिदास, भवभूति, माघ तथा दण्डी के साथ मल्लिनाथ को भी राजसभा में उपस्थित पाते हैं। भोज प्रबन्ध में उल्लिखित है कि बहुत समय पहले की बात है धारा राज्य में सिंधुला नाम का एक राजा रहता था और वह बहुत दिनों से वहां राज्य कर रहा था। उसका एक पुत्र हुआ जिसका नाम भोज था।[51] इस ग्रंथ में भोज की मृत्यु पर उल्लिखित है कि 'आज धारा आधारहीन हो गयी है, सरस्वती निरालम्ब हो गयी है, सभी पंडित खण्डित हो गये हैं'[52]। इस प्रकार बल्लालसेन द्वारा रचित यह काव्यग्रंथ भोज की राजसभा से सम्बन्धित, बुद्धि–पाटव से युक्त, परन्तु बिल्कुल अप्रामाणिक आख्यानों का संग्रह है।[53]

**निष्कर्ष**

इस प्रकार स्पष्ट है कि मालवा के ऐतिहासिक भूगोल के अध्ययन से सम्बद्ध साहित्यिक ग्रंथ धार्मिक एवं लौकिक हैं, जिनका ऐतिहासिक अध्ययन तत्कालीन भौगोलिक विस्तार एवं सांस्कृतिक प्रगति पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होता है। अधीतकालीन ग्रन्थों में प्राप्त मालवा से सम्बन्धित विभिन्न नगरों, नदियों, पर्वतों, मंदिरों, तीर्थस्थलों एवं यात्रा–पथ का अभिज्ञान तथा उनके सांस्कृतिक महत्व को उद्घाटित किया गया है। अधीतकालीन मालवा में मुख्यतः परमारों का इतिहास है। उपर्युक्त ग्रन्थों में परमारों की उत्पत्ति से लेकर उनके चर्मोत्कर्ष तक के सांस्कृतिक इतिहास की झाँकी प्रस्तुत होती है। इनमें हमें मालवा की प्राकृतिक संरचना, वनों, पर्वतों, ऋतुओं का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न देवालयों, समृद्ध नगरी उज्जयिनी एवं धार का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। भोज के समय में धार जैनियों, मुनियों, ज्ञानियों एवं शिक्षा का गढ़ माना जाता था। इस प्रकार मालवा और मालवा स्थित उज्जयिनी और महाकाल की महिमा अतिविस्तृत है। हजारों वर्षों के अपने सौंदर्य माधुर्य एवं सौहार्द से इस नगरी की महिमा अनवरत् बढ़ती ही रही है और आज भी सकल कालजयी भगवान महाकाल सबके रक्षक हैं। 20वीं शताब्दी के आधुनिक कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की ललित कविता 'स्वप्नलोक उज्जयिनी' एवं डॉ0 शिवमंगल सिंह की 'सुमन' की पंक्ति 'मैं सिप्रा–सा तरल–सरल बहता हूँ' बरबस ही मालवा के भौगोलिक महत्व को उजागर करता है।

किसी भी क्षेत्र की सम्पूर्ण रूपरेखा खींचने के लिए स्रोतों की विभिन्न विधाओं के ज्ञान की आवश्यता होती है। उज्जयिनी के परिसर में विखरी बहुमूल्य पाण्डुलिपियों का संग्रहण 'सिंधिया ओरियंटल शोध संस्थान', विक्रमशिला विश्वविद्यालय, उज्जैन में संग्रहीत हैं। इनके अध्ययन से तत्कालीन शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक पुनरूज्जीवन के उद्देश्यों में और दृढ़ता आयेगी। मालवा में प्रचलित लोकनाट्य परम्परायें (माच) जो ऐतिहासिक, पौराणिक एवं लोककथाओं पर आधारित हैं इनका भी अध्ययन होना चाहिए। महाकाल से सम्बन्धित मुद्रायें, ज्योतिर्लिंग का अध्ययन एवं इन सबके पूरक सामग्री के रूप में सबसे महत्वपूर्ण आभिलेखिक साक्ष्यों की भी अपेक्षा है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. *नवसहसांकचरित, पद्मगुप्त कृत, सं0–वी0एस0 इस्लामपुरकर, बी0एस0एस0, बम्बई 1985.*
   *–नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, सन् 1963.*
   *–शर्मा, डा0 महेशचन्द्र, 'महाकवि पद्मगुप्त: प्रतिभा और कला', सरोज प्रकाश, मेरठ, 2001.*

2. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, 1963, प्रथम सर्ग, श्लोक–1, 2, 3, पृ0–1.
3. नवसहसांकचरितम्, परिमल पद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, 1963, प्रथम सर्ग, श्लोक 5–8, पृ0–2.
4. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, 1963, प्रथम सर्ग, श्लोक 17–57, पृ0–4.
5. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, 1963, प्रथम सर्ग, श्लोक 58–87, पृ0–11.
6. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, 1963, प्रथम सर्ग, श्लोक 90, पृ0–17.
7. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, 1963, षष्ठ सर्ग, श्लोक–22, पृ0–84.
8. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, 1963, सर्ग–11, श्लोक–76–79.
9. एपिग्रैफिया इण्डिका, प्रथम, पृ0–233–34.
10. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, 1963, सर्ग–11, 'परमारवंशवर्णनम्'।
11. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, 1963, सर्ग–10, श्लोक–18.
12. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी सर्ग–10, श्लोक–17.
13. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी सर्ग–10, श्लोक–19.
14. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी सर्ग–10, श्लोक–16.
15. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी सर्ग–10, श्लोक–15.
16. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी सर्ग–14.
17. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी सर्ग–11.
18. नवसहसांकचरितम्, परिमलपद्मगुप्त कृत, जितेन्द्रचन्द्र भारतीय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी सर्ग–2, श्लोक 61–68.
19. रेउ, विश्वेश्वरनाथ, 'राजाभोज', हिन्दुस्तानी एकेडमी, उ0प्र0, इलाहाबाद, 1932. –लेले, काशीनाथ कृष्ण तथा ओक, शिवराम काशीनाथ, 'भोजदेव की साहित्य–सेवा', इतिहास ऑफिस, धार, 1934।
20. श्रृंगारमंजरीकथा, भोज कृत, सं0–आचार्य जिनविजय मुनि, सिंधी जैन, ग्रंथमाला–30, भारतीय विद्याभवन, बम्बई, वि0सं0–2015.
21. श्रृंगारमंजरीकथा, भोज कृत, सं0–आचार्य जिनविजय मुनि, सिंधी जैन, ग्रंथमाला–30, भारतीय विद्याभवन, बम्बई, पृ0–2, 'धरानगर्यावर्णनम्'।
22. श्रृंगारमंजरीकथा, भोज कृत, सं0–आचार्य जिनविजय मुनि, सिंधी जैन, ग्रंथमाला–30, भारतीय विद्याभवन, बम्बई, पृ0–7, 'धाराधीश भोजदेववर्णनम्'।
23. श्रृंगारमंजरीकथा, भोज कृत, सं0–आचार्य जिनविजय मुनि, सिंधी जैन, ग्रंथमाला–30, भारतीय विद्याभवन, बम्बई, पृ0–30, 'चतुर्थी सूधर्मकथानिका'।
24. श्रृंगारमंजरीकथा, भोज कृत, सं0–आचार्य जिनविजय मुनि, सिंधी जैन, ग्रंथमाला–30, भारतीय विद्याभवन, बम्बई, पृ0–35, 'पंचमी देवदत्ताकथानिका'।
25. श्रृंगारमंजरीकथा, भोज कृत, सं0–आचार्य जिनविजय मुनि, सिंधी जैन, ग्रंथमाला–30, भारतीय विद्याभवन, बम्बई, पृ0–48, 'सप्तमी कुट्टनीर्व चनकथानिका'।
26. श्रृंगारमंजरीकथा, भोज कृत, सं0–आचार्य जिनविजय मुनि, सिंधी जैन, ग्रंथमाला–30, भारतीय विद्याभवन, बम्बई, पृ0–56, 'अष्टमी स्ऱ्यनुरागकथानिका'।
27. श्रृंगारमंजरीकथा, भोज कृत, सं0–आचार्य जिनविजय मुनि, सिंधी जैन, ग्रंथमाला–30, भारतीय विद्याभवन, बम्बई, पृ0–84, 'त्रयोदशी मूलदेवकथानिका'।
28. श्रृंगारमंजरीकथा, भोज कृत, सं0–आचार्य जिनविजय मुनि, सिंधी जैन, ग्रंथमाला–30, भारतीय विद्याभवन, बम्बई, पृ0–35 'पंचमी देवदत्ताकथानिका'।
29. अभिधानचिन्तामणि, हेमचन्द्र आचार्य कृत, सं0 नेमिनाथ शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1964, विद्याभवन, संस्कृत सीरीज–109.
30. अभिधानचिन्तामणि, हेमचन्द्रआचार्य कृत, सं0 नेमिनाथ शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1964, विद्याभवन, संस्कृत सीरीज–109. तिर्यककाण्डः4, श्लोक–42, पृ0–242. 'उज्जयिनी श्याद्विशालाऽवन्ती पुण्यकरण्डिनी'
31. वड्ढमाणचरिउ, बुधश्रीहरि कृत, सं0–राजाराम जैन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1975, ज्ञानपीठ मूर्ति देवी ग्रंथमाला अपभ्रंश ग्रन्थांक–4.
32. वड्ढमाणचरिउ, बुधश्रीहरि कृत, सं0–राजाराम जैन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1975, ज्ञानपीठ मूर्ति देवी ग्रंथमाला अपभ्रंश ग्रन्थांक–4, संधि–7, पृ0–169.
33. वड्ढमाणचरिउ, बुधश्रीहरि कृत, सं0–राजाराम जैन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1975, ज्ञानपीठ मूर्ति देवी ग्रंथमाला अपभ्रंश ग्रन्थांक–4, संधि–7, पृ0–169.
34. खतरगच्छबृहद्गुर्वावलि, आचार्य जिनविजय मुनि, भारतीय विद्याभवन, मुम्बई, वि0सं0–2013, सिंधी जैन ग्रंथमाला–42.

35. खतरगच्छबृहद्गुर्वावलि, आचार्य जिनविजय मुनि, भारतीय विद्याभवन, मुम्बई, वि0सं0–2013, सिंधी जैन ग्रंथमाला–42, पृ0–13.
36. खतरगच्छबृहद्गुर्वावलि, आचार्य जिनविजय मुनि, भारतीय विद्याभवन, मुम्बई, वि0सं0–2013, सिंधी जैन ग्रंथमाला–42, पृ0–20.
37. खतरगच्छबृहद्गुर्वावलि, आचार्य जिनविजय मुनि, भारतीय विद्याभवन, मुम्बई, वि0सं0–2013, सिंधी जैन ग्रंथमाला–42, पृ0–19.
38. खतरगच्छबृहद्गुर्वावलि, आचार्य जिनविजय मुनि, भारतीय विद्याभवन, मुम्बई, वि0सं0–2013, सिंधी जैन ग्रंथमाला–42, पृ0–50.
39. खतरगच्छबृहद्गुर्वावलि, आचार्य जिनविजय मुनि, भारतीय विद्याभवन, मुम्बई, वि0सं0–2013, सिंधी जैन ग्रंथमाला–42, पृ0–51.
40. खतरगच्छबृहद्गुर्वावलि, आचार्य जिनविजय मुनि, भारतीय विद्याभवन, मुम्बई, वि0सं0–2013, सिंधी जैन ग्रंथमाला–42, पृ0–90, 92.
41. प्रभावकचरित्, प्रभाचन्द्रसूरि कृत, सं0–मुनि जिनविजय, सिंधी जैन, ग्रंथमाला–13, कलकत्ता 1940.
42. प्रभावकचरित्, प्रभाचन्द्रसूरि कृत, सं0–मुनि जिनविजय, सिंधी जैन, ग्रंथमाला–13, कलकत्ता 1940. पृ0–156, 157, 185.
43. सूक्तिमुक्तावली, जल्हड़ कृत, सं0–ई0 कृष्णमाचार्य, गायकवाड़ ओरिएण्टल सीरीज, बड़ौदा LXXXII, 1938.
44. सूक्तिमुक्तावली, जल्हड़ कृत, सं0–ई0 कृष्णा माचार्य, गायकवाड़ ओरिएण्टल सीरीज, बड़ौदा LXXXII, 1938, सूक्ति 14, 15, 16 पृ0 363–364.
45. सूक्तिमुक्तावली, जल्हड़ कृत, सं0–ई0 कृष्णा माचार्य, गायकवाड़ ओरिएण्टल सीरीज, बड़ौदा LXXXII, 1938, सूक्ति 25, पृ0 380
–लेखं सञ्चरितुं तरग्तरलभ्रूलेखम्भालो कितुं
–रम्यं स्थातुमनादरार्पितमनोमुद्रञ्च संभावितुम्।
–संत्यज्योज्जयिनीं जनैर्विवदितुं हृद्यं च हे मानवाः
–प्रत्यर्ग्पणसुन्दरं च न जनो जानाति रन्तु परः।।25।।
46. प्रबन्धचिन्तामणि, मेरूतुंगाचार्य कृत, सं0 दीनानाथ शास्त्री, प्रथम संस्करण, बम्बई 1888.
–प्रबन्धचिन्तामणि, मेरुतुंगाचार्य कृत, सं0 दुर्गाशंकर केवलराम शास्त्री, श्री फार्ब्स गुजराती सभा ग्रंथावली–14.
47. प्रबन्धचिन्तामणि, मेरूतुंगाचार्य कृत, सं0 दीनानाथ शास्त्री, प्रथम संस्करण, बम्बई 1888., द्वितीय प्रकाश, पृ0 30–34.
48. प्रबन्धचिन्तामणि, मेरूतुंगाचार्य कृत, सं0 दीनानाथ शास्त्री, प्रथम संस्करण, बम्बई 1888., द्वितीय प्रकाश, द्वितीय प्रकाश।
49. प्रबन्धचिन्तामणि, मेरूतुंगाचार्य कृत, सं0 दीनानाथ शास्त्री, प्रथम संस्करण, बम्बई 1888., द्वितीय प्रकाश, पृ0 36–42.
50. भोजप्रबन्ध, बल्लाल कृत, सं0–वाचस्पति उपाध्याय, श्रीलाल बहादुर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।
51. भोजप्रबन्ध, बल्लालकृत, सं0–वाचस्पति उपाध्याय, श्रीलाल बहादुर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली। भोजराजस्य राज्य प्राप्ति, पृ0–1.
52. भोजप्रबन्ध, बल्लाल कृत, सं0–डॉ0 देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, चौखम्बा अमर भारती प्रकाशन, वाराणसी, 1979, ग्रंथमाला–34. 36वाँ प्रबन्ध, पृ0–181.
–अद्यधारा निराधारा निरालम्बा सरस्वती।
–पण्डिताः खण्डिताः सर्वे भोजराजे दिवंगते।।326।।
53. कीथ, 'संस्कृत साहित्य का इतिहास', मोती लाल बनारसीदास, 1967, पृ0–365.